राष्ट्रपति जी की नई मिसाईल

क्या आपके पास अपने देश के लिए दस मिनिट है...?

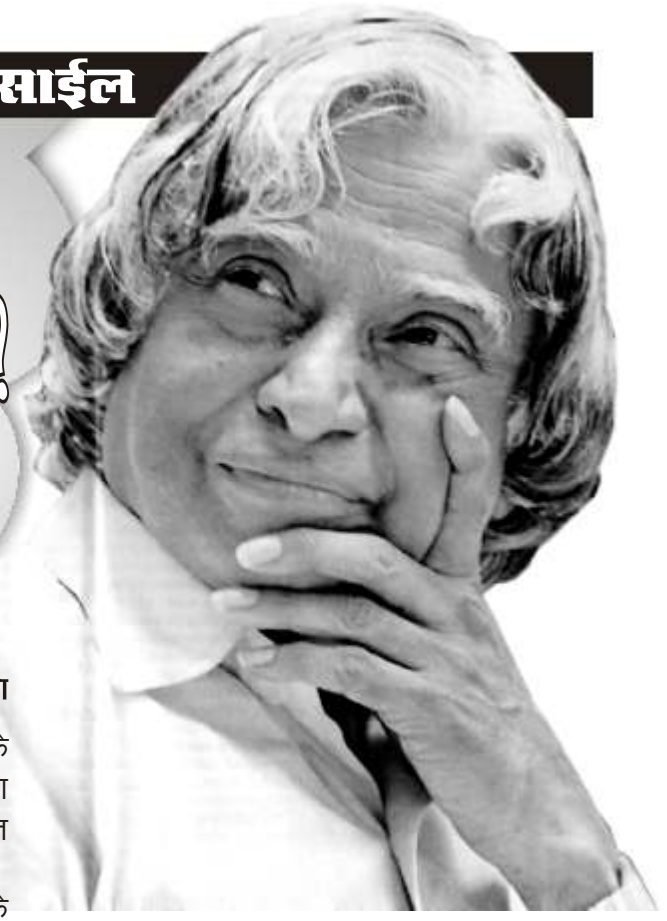

जी.एस. अरोड़ा

देश के लोगों को श्रेष्ठ नागरिक बनाने के अभियान में जुटे राष्ट्रपति अब्दुल कलाम का एक संदेश इन दिनों इन्टरनेट की दुनिया में जबर्दस्त लोकप्रियता हासिल कर रहा है।

इस निराले ई–मेल संदेश में डॉ. कलाम ने घर के मुखिया के नाते देशवासियों को ऐसी मीठी फटकार लगाई है कि पढ़ने वाला अपनी रोज़मर्रा की कुछ करतूतों पर शर्म महसूस करने लगे और ऐसी नसीहतें भी दी हैं कि मन में भारत और भारतीयता के प्रति गर्व होने लगे। डॉ. एपीजे कलाम अपने संदेश की शुरूआत में ही पूछते हैं। क्या आपके पास अपने देश के लिए दस मिनट का समय है? यदि हां तो इसे पढ़िए वर्ना मर्जी आपकी, इसके बाद वह देश के लोगों की सोच बताते हुए कहते हैं–

- आप कहते हैं– हमारी सरकार निकम्मी है।
- आप कहते हैं– हमारे कानून पुराने पड़ गए।
- आप कहते हैं–एयरलाइन दुनिया में हमारी ही सबसे खराब है।
- आप कहते हैं– चिट्ठी अपनी मंज़िल तक नहीं पहुँचती।
- आप कहते हैं, कहते रहते हैं और कहते ही रहते हैं। आपने इस बारे में क्या किया।

फिर राष्ट्रपति ने कहा– मान लीजिए एक व्यक्ति सिंगापुर जा रहा है उसे अपना नाम दीजिए, उसे अपनी शक्ल भी दे दीजिए आप दुनिया के सर्वश्रेष्ठ हवाई अड्डे पर उतरते हैं, सिंगापुर में आप अपनी सिगरेट का टुकड़ा सड़क पर नहीं फेंकते और स्टोर में खाते भी नहीं हैं। आपको उनके भूमिगत रेल पर रश्क महसूस होता है।

आप शाम पाँच से आठ बजे के बीच आर्चर्ड रोड पर कार चलाने का तकरीबन साठ रूपए भुगतान करते हैं।

आपने अगर पार्किंग में निर्धारित समय से ज्यादा गाड़ी खड़ी की तो टिकट पंच कराते हैं, लेकिन आप सिंगापुर में कुछ नहीं कहते हैं। क्यों?

दुबई में आप रमज़ान के दिनों में सार्वजनिक रूप से कुछ भी खाने का साहस नहीं करते। जद्दाह में बिना सिर ढँके बाहर नहीं निकलते। वाशिंगटन में आप 55 मील प्रतिघंटा से ऊपर गाड़ी चलाने की हिमाकत नहीं करते और पलट कर सिपाही से यह

भी नहीं कहते कि जानता है मैं कौन हूं और फला मेरा बाप है।

आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के समुद्र तटों पर आप खाली नारियल हवा में नहीं उछालते। टोक्यों में आप सड़को पर पान की पीक नहीं थूकते। बोस्टन में आप जाली योग्यता प्रमाण–पत्र क्यो नही खरीदते। डॉ. कलाम बीच मे याद दिलाते हैं– मैं आप ही के बारे में बात कर रहा हूँ, सिर्फ आपके।

डॉ. कलाम कहते हैं आप दूसरे देशों की व्यवस्था का आदर और पालन कर सकते हैं– लेकिन अपनी व्यवस्था का नहीं। भारतीय धरती पर कदम रखते ही आप सिगरेट का टुकड़ा जहाँ– तहाँ फेंकते हैं कागज के पुर्जे उछालते हैं। यदि आप पराए देश में प्रशंसनीय नागरिक हो सकते हैं तो यहां भारत में आप ऐसा क्यों नहीं बन सकते। डॉ. कलाम ने मुम्बई के पूर्व महानगर पालिका आयुक्त तिनायकर के हवाले से कहा– अमीर लोग अपने कुत्तों को सड़कों पर घुमाने निकलते हैं और जहाँ– तहाँ गंदगी बिखेरकर आ जाते हैं। और फिर वही लोग सड़कों पर गंदगी के लिए प्रशासन पर दोष मढ़ते हैं। क्या वे उम्मीद करते हैं कि वे जब भी बाहर निकलेंगे तो एक अधिकारी झाड़ू लेकर उनके पीछे– पीछे चलेगा और जब उनके कुत्ते को हाज़त लगेगी तो वह एक कटोरा उसके पीछे लगाएगा।

श्री जी.एस. अरोरा जाने–माने समाजसेवी हैं। पत्रों व ई–मेल द्वारा लोगों को अच्छे नागरिक बनने के लिए उत्साहित करते रहते हैं। यदि आपके पास भी कुछ सुरूचि पूर्ण प्रकाशनयोग्य सामग्री हो तो हमें प्रकाशित करने में खुशी होगी।

–सम्पादक

राष्ट्रपति ने मिसाल दी कि अमेरिका और जापान में कुत्ते के मालिक को उसकी छोड़ी हुई गंदगी साफ करनी पड़ती है। फिर शासन व्यवस्था के बारे में डॉ. कलाम ने कहा कि हम सरकार चुनने के लिए वोट डालने जाते हैं और अपनी सारी जिम्मेदारियाँ भी वहीं उलट आते हैं। हम आराम से बैठकर सोचते हैं कि हर काम सरकार करेगी और हम फर्श पर पड़ा हुआ रद्दी का कागज उठाकर उस कूड़ेदार में डालने की जहमत तक नहीं उठाते। रेल्वे हमारे लिए साफ– सुथरे बाथरूम देगी और हम उन्हें ठीक से इस्तेमाल करना भी नहीं सीखते।

डॉ. कलाम ने कहा कि समाज की ज्वलंत समस्याओं पर भी हमारा ऐसा ही रवैया है। हम ड्राइंग रूम में बैठकर दहेज के खिलाफ गला फाड़ते हैं और अपने घर में इसका उलटा करते हैं और बहाना देखिए– पूरी व्यवस्था ही खराब है।

अगर मैं अपने बेटे की शादी में दहेज नहीं लूँगा तो इससे कौन– सा बड़ा फर्क पड़ जाएगा।

राष्ट्रपति जी ने इस संदेश में पूछा– इस व्यवस्था को बदलेगा कौन? यह व्यवस्था है किसकी? आप आसानी से कह देंगे, व्यवस्था में शामिल हैं, हमारे पड़ोसी, आसपास के घर, अन्य शहर, अन्य समुदाय और सरकार। लेकिन मैं और आप कतई नहीं। जब कुछ अच्छा करने की हमारी बारी आती है तो हम अपने परिवार को सुरक्षित कवच में घेर लेते हैं। दूसरे देशों की ओर निहारते हैं और इंतजार करते हैं कि कोई मिस्टर क्लीन आएगा, अपने जादुई हाथों से चमत्कार करेगा और ऐसा नहीं होता तो आप देश छोड़कर ही चल देंगे। उन्होंने कहा– हम अपने भय से भागकर अमेरिका जाएँगे। उनके गौरव का गुणगान करेंगे और जब न्यूयॉर्क असुरक्षित हो जाएगा तो आप इंग्लैंड भाग जाएँगे। इंग्लैंड में बेरोजगारी होगी तो खाड़ी चले जाएँगे और जब खाड़ी मे युद्ध छिड़ जाएगा तो आप माँग करेंगे कि भारत सरकार हमें बचाकर घर ले जाए। हर कोई देश को गाली देने को तैयार है पर व्यवस्था में सकारात्मक योगदान के बारे में कोई नहीं सोचता। क्या हमने अपनी आत्मा को पैसे के हाथों गिरवी रख दिया है।

डॉ. कलाम व्यवस्था में नागरिकों के सकारात्मक योगदान के लिए देशवासियों को झकझोर देते हैं। श्रेष्ठ नागरिक बनने की शुरूआत करने की अपील करते हुए संदेश में कहा गया है कि अगर आप वाकई संदेश से सहमत हैं तो इसे अपने दस और साथियों को ई–मेल से भेजिए।

साथियों, मैंने इसलिए डॉ. कलाम का सन्देश आपकी ओर भेजा है आप भी कृपया यह संदेश जन–जन को पहुँचाऐं।

●●●